INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 6 | JULY – 2026

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण का अध्ययन

श्वेता चौधरी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. मोहित लाल वर्मा
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ब्यौहारी, जिला शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

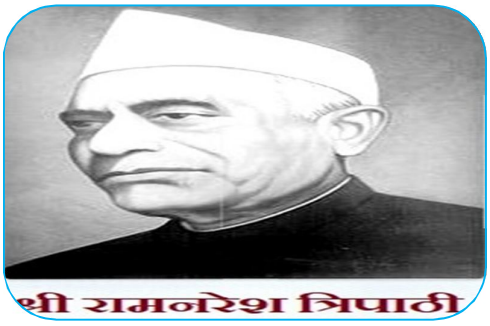

हिंदी कविता की परंपरा में गाँव सदैव जीवन, संस्कृति, प्रकृति और सामाजिक संबंधों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। ग्रामीण जीवन में निहित संघर्ष, श्रम, लोक–संस्कृति, आर्थिक कठिनाइयाँ और मानवीय संबंधों को कवियों ने अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है। रामनरेश का काव्य भी ग्रामीण समाज के विविध पक्षों को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करता है। उनकी कविताओं में गाँव का प्राकृतिक परिवेश, किसान जीवन, श्रमिकों की समस्याएँ, ग्रामीण संस्कृति, सामाजिक संबंध और सामान्य जन की भावनाएँ प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। रामनरेश ग्रामीण जीवन को केवल कल्पना और सौंदर्य के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसके वास्तविक स्वरूप को अपनी कविताओं में स्थान देते हैं। उनके काव्य में गाँव की खुशियों के साथ–साथ गरीबी, अभाव, संघर्ष और सामाजिक विषमताओं का भी चित्रण मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन में रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन की वास्तविकता, लोक चेतना, मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकारों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि रामनरेश का काव्य ग्रामीण समाज के जीवन–संघर्षों और सांस्कृतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है।

मुख्य शब्द – रामनरेश, ग्रामीण जीवन, यथार्थ चित्रण, किसान जीवन, लोक संस्कृति, सामाजिक चेतना एवं हिंदी कविता।

प्रस्तावना –

हिन्दी साहित्य में ग्रामीण जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना का मूल आधार सदियों से ग्राम्य जीवन रहा है। गाँव केवल भौगोलिक इकाई नहीं, अपितु भारतीय सभ्यता, लोक–संस्कृति, परंपरा, श्रम–संस्कार तथा मानवीय संबंधों का जीवंत केंद्र है। हिन्दी साहित्यकारों ने विभिन्न कालों में ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों का चित्रण करते हुए उसकी वास्तविक समस्याओं, संवेदनाओं एवं सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की है। विशेषतः आधुनिक हिन्दी कविता में ग्रामीण जीवन का चित्रण केवल प्रकृति–सौंदर्य तक सीमित न रहकर सामाजिक यथार्थ, आर्थिक विषमता, कृषक–जीवन, श्रमिक वर्ग, लोक–परंपराओं तथा मानवीय संघर्षों के बहुआयामी स्वरूप को उद्घाटित करता है।

यथार्थवाद साहित्य की वह प्रवृत्ति है, जिसमें जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, सामाजिक संबंधों तथा मानवीय अनुभवों का चित्रण बिना किसी कृत्रिम अलंकरण के किया जाता है। यथार्थवादी साहित्यकार समाज के बाह्य स्वरूप के साथ–साथ उसके अंतर्निहित अंतर्विरोधों, संघर्षों तथा मानवीय संवेदनाओं का भी सूक्ष्म विश्लेषण करता है। ''ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण का आशय केवल प्राकृतिक सौंदर्य, हरित खेतों, नदियों अथवा ऋतु–वर्णन तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, निर्धन एवं वंचित वर्गों के जीवन–संघर्ष, श्रम, अभाव, सामाजिक विसंगतियों तथा सांस्कृतिक मूल्यों का सम्यक् चित्रण भी निहित होता है।''[1]

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन का चित्रण अत्यंत सहज, संवेदनशील एवं यथार्थपरक रूप में प्राप्त होता है। उनकी काव्य–दृष्टि ग्रामीण समाज के सामान्य जनजीवन से गहरे स्तर पर जुड़ी हुई है। वे गाँव को केवल रमणीय प्राकृतिक परिवेश के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि वहाँ के श्रमशील मनुष्य, उसकी जीविका, संघर्ष, अभाव, आत्मसम्मान तथा मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाते हैं। ''उनकी कविताओं में किसान, खेत, खलिहान, श्रमिक, परिवार, लोक–संस्कृति तथा प्रकृति का ऐसा समन्वित चित्र उपस्थित होता है, जो भारतीय ग्राम्य जीवन की वास्तविक पहचान बन जाता है।''[2]

रामनरेश के काव्य में किसान जीवन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारतीय कृषि–प्रधान समाज में किसान राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था का आधार माना जाता है, किन्तु उसका जीवन प्राकृतिक आपदाओं, ऋणग्रस्तता, सीमित संसाधनों तथा आर्थिक विषमताओं से निरंतर प्रभावित रहता है। कवि किसान को केवल अन्नदाता के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र की जीवन–शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। ''उनकी कविताओं में किसान के श्रम, त्याग, धैर्य, संघर्ष तथा आत्मविश्वास का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। यह चित्रण केवल सहानुभूति का नहीं, बल्कि किसान के श्रम–सम्मान की स्थापना का भी सशक्त प्रयास है।''[3]

ग्रामीण समाज में श्रमिक वर्ग का जीवन भी रामनरेश की कविताओं का महत्त्वपूर्ण विषय है। कवि उन श्रमिकों के जीवन को स्वर प्रदान करते हैं, जिनके श्रम पर समाज की आर्थिक एवं सामाजिक संरचना टिकी हुई है, किन्तु जिन्हें पर्याप्त सम्मान एवं अधिकार प्राप्त नहीं हो पाते। ''उनकी कविताओं में श्रम की गरिमा, श्रमिक वर्ग की पीड़ा तथा सामाजिक असमानता के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त हुई है।''[4] इस प्रकार उनका काव्य सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा तथा श्रम–संस्कृति का समर्थ पक्षधर दिखाई देता है।

रामनरेश ग्रामीण जीवन की सामाजिक समस्याओं का भी अत्यंत यथार्थ चित्रण करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, रूढ़िवादिता, आर्थिक विषमता तथा सामाजिक शोषण उनके काव्य में प्रमुख रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। वे इन समस्याओं का चित्रण केवल करुणा उत्पन्न करने के उद्देश्य से नहीं करते, बल्कि समाज को आत्मचिंतन एवं परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करते हैं। उनके अनुसार ''किसी भी राष्ट्र का समग्र विकास तभी संभव है, जब ग्रामीण समाज आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टि से सशक्त बने।''[5]

ग्रामीण जीवन का सांस्कृतिक पक्ष भी रामनरेश के काव्य में अत्यंत सशक्त रूप में उभरकर सामने आता है। गाँव के त्योहार, लोकाचार, पारिवारिक संबंध, सामूहिक जीवन, पारस्परिक सहयोग, लोकगीत तथा परंपराएँ उनकी कविताओं को विशिष्ट सांस्कृतिक आधार प्रदान करती हैं। वे ग्रामीण संस्कृति की आत्मीयता, सरलता एवं मानवीय मूल्यों को आधुनिक जीवन की कृत्रिमता के समक्ष एक सशक्त विकल्प के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके काव्य में ग्राम्य जीवन केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता एवं सामाजिक समरसता का प्रतीक बनकर उपस्थित होता है।

प्रकृति और ग्रामीण जीवन का संबंध रामनरेश के काव्य की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है। उनकी कविताओं में खेत, वृक्ष, नदियाँ, ऋतुएँ, वर्षा, मिट्टी तथा प्राकृतिक परिवेश केवल सौंदर्य के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन के अभिन्न अंग हैं। प्रकृति किसान के श्रम, आशा, संघर्ष एवं जीवन–चक्र से गहराई से जुड़ी हुई है। इसलिए कवि प्रकृति को मानवीय संवेदनाओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रकृति जीवन की सहचरी, प्रेरणा तथा संघर्ष की सहभागी बन जाती है।

भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से भी रामनरेश का काव्य ग्रामीण यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है। ''उनकी भाषा सरल, सहज, संप्रेषणीय तथा लोकजीवन से संपृक्त है। लोक–प्रचलित शब्दावली, ग्रामीण मुहावरों, लोक–बिंबों तथा स्वाभाविक अभिव्यक्ति के कारण उनकी कविताएँ ग्राम्य जीवन की वास्तविक अनुभूति कराती हैं।''[6] भाषा की यही सहजता उनके काव्य को व्यापक जन–स्वीकृति प्रदान करती है तथा पाठक को सीधे ग्रामीण परिवेश से जोड़ देती है।

अतः स्पष्ट है कि रामनरेश की कविताएँ ग्रामीण जीवन का केवल वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर निहित सामाजिक यथार्थ, आर्थिक संघर्ष, सांस्कृतिक चेतना, मानवीय संवेदनाओं तथा जीवन–मूल्यों का व्यापक चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनका काव्य भारतीय ग्राम्य जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है, जिसमें किसान, श्रमिक, प्रकृति, लोक–संस्कृति तथा सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा एक साथ अभिव्यक्त होती है। इस दृष्टि से रामनरेश का काव्य हिन्दी साहित्य में ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण की परंपरा को समृद्ध करने वाला महत्त्वपूर्ण साहित्यिक अवदान सिद्ध होता है।

विश्लेषण –

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन का चित्रण भारतीय गाँवों की वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर हुआ है। उनका काव्य गाँव को केवल प्राकृतिक सौंदर्य और सरल जीवन के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि वहाँ के सामाजिक, आर्थिक और मानवीय पक्षों को भी उजागर करता है। कवि ने ग्रामीण समाज के सामान्य व्यक्ति के जीवन, उसकी आशाओं, संघर्षों और समस्याओं को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। उनके काव्य में गाँव की मिट्टी से जुड़ी हुई संवेदना और ग्रामीण जीवन की वास्तविक अनुभूतियाँ दिखाई देती हैं।

रामनरेश ग्रामीण जीवन को निकट से देखने वाले कवि हैं। उनकी कविताओं में गाँव का जीवन अपनी संपूर्णता के साथ उपस्थित होता है। खेतों में काम करता किसान, श्रम करता मजदूर, परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाते ग्रामीण लोग और प्रकृति के साथ उनका संबंधकृये सभी तत्व उनके काव्य में जीवंत रूप से दिखाई देते हैं। वे ग्रामीण जीवन के सुखद पक्षों के साथ–साथ उसकी कठिन परिस्थितियों को भी समान महत्व देते हैं। यही कारण है कि उनका काव्य ग्रामीण जीवन का यथार्थ दस्तावेज बन जाता है।

रामनरेश के काव्य में किसान जीवन का विशेष महत्व है। भारतीय ग्रामीण समाज में किसान केवल आर्थिक व्यवस्था का आधार नहीं है, बल्कि वह संस्कृति और जीवन–परंपरा का भी वाहक है। कवि ने किसान के श्रम, संघर्ष और धैर्य को सम्मान के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कविताओं में किसान की मेहनत, प्रकृति पर उसकी निर्भरता और जीवन की कठिन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

कवि किसान को केवल अभावग्रस्त व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसके भीतर मौजूद साहस, आत्मविश्वास और कर्मशीलता को भी रेखांकित करते हैं। किसान कठिन परिस्थितियों में भी आशा बनाए रखता है और निरंतर श्रम करता है। रामनरेश के काव्य में श्रम को सम्मान और गरिमा प्रदान की गई है। वे यह संदेश देते हैं कि समाज की वास्तविक प्रगति उन लोगों के श्रम पर आधारित है, जो अपने परिश्रम से जीवन को आगे बढ़ाते हैं।

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। वे गाँवों में व्याप्त गरीबी, आर्थिक असमानता, अशिक्षा और संघर्षपूर्ण परिस्थितियों को संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। उनका उद्देश्य केवल समस्याओं का वर्णन करना नहीं है, बल्कि समाज को इन परिस्थितियों के प्रति जागरूक करना भी है।

ग्रामीण समाज में रहने वाले सामान्य लोगों के जीवन में अनेक कठिनाइयाँ होती हैं। सीमित संसाधन, रोजगार की कमी और आर्थिक असुरक्षा उनके जीवन को प्रभावित करती है। रामनरेश इन समस्याओं को मानवीय दृष्टिकोण से देखते हैं। उनकी कविताएँ ग्रामीण समाज के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करती हैं और सामाजिक सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

रामनरेश के काव्य में ग्रामीण संस्कृति और लोक जीवन का सुंदर चित्रण मिलता है। गाँवों की परंपराएँ, लोक व्यवहार, त्योहार, रीति–रिवाज और सामाजिक संबंध उनकी कविताओं में विशेष स्थान रखते हैं। वे ग्रामीण संस्कृति में मौजूद आत्मीयता, सहयोग और सामूहिक भावना को महत्व देते हैं। उनकी कविताओं में ग्रामीण जीवन की सरलता और प्राकृतिक सहजता दिखाई देती है। गाँव का व्यक्ति भले ही आर्थिक रूप से सीमित हो, लेकिन उसके जीवन में संबंधों की समृद्धि और भावनात्मक जुड़ाव दिखाई देता है। रामनरेश ने ग्रामीण संस्कृति के इन्हीं मानवीय पक्षों को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है।

रामनरेश की कविताओं में प्रकृति और ग्रामीण जीवन का गहरा संबंध दिखाई देता है। गाँव का जीवन प्रकृति के अत्यंत निकट होता है और किसान का जीवन ऋतुओं, वर्षा और प्राकृतिक परिस्थितियों से प्रभावित

होता है। कवि ने खेतों, पेड़–पौधों, नदियों और प्राकृतिक वातावरण का चित्रण करते हुए ग्रामीण जीवन की आत्मीयता को व्यक्त किया है। उनके काव्य में प्रकृति केवल बाहरी सौंदर्य का विषय नहीं है, बल्कि वह ग्रामीण मनुष्य के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। प्रकृति के साथ मनुष्य का संबंध उनके काव्य में भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार रामनरेश ने ग्रामीण जीवन और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण समाज के मानवीय संबंधों का भी महत्वपूर्ण चित्रण मिलता है। गाँवों में परिवार, पड़ोस और समुदाय के बीच जो आत्मीयता और सहयोग की भावना होती है, उसे कवि ने संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में मानवीय संबंधों की गरिमा और सामाजिक एकता का भाव दिखाई देता है। इसके साथ ही कवि ग्रामीण समाज की कमजोरियों और विसंगतियों के प्रति भी सजग हैं। वे सामाजिक असमानताओं और रूढ़ियों को पहचानते हैं तथा बेहतर सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देते हैं। इस प्रकार उनका काव्य ग्रामीण जीवन के यथार्थ के साथ सामाजिक परिवर्तन की चेतना को भी अभिव्यक्त करता है।

रामनरेश की भाषा ग्रामीण जीवन की सहजता और स्वाभाविकता को व्यक्त करने में सक्षम है। उनकी भाषा सरल, प्रभावशाली और जनसामान्य से जुड़ी हुई है। उन्होंने ग्रामीण परिवेश के अनुरूप शब्दों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया है, जिससे उनकी कविताएँ अधिक जीवंत बनती हैं। उनकी शैली में यथार्थवाद, संवेदना और लोक जीवन की आत्मीयता का सुंदर समन्वय मिलता है। वे सरल भाषा में गहरी सामाजिक और मानवीय अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं। यही विशेषता उनके काव्य को व्यापक प्रभाव प्रदान करती है।

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन का चित्रण यथार्थ, संवेदना और सामाजिक दृष्टि के साथ हुआ है। उन्होंने गाँव को केवल सौंदर्य और परंपरा के केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष, श्रम, संस्कृति और मानवीय संबंधों के जीवंत संसार के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी कविताएँ ग्रामीण समाज की वास्तविक परिस्थितियों को उजागर करते हुए उसके मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक विशेषताओं को भी सामने लाती हैं।

ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण से संबंधित रामनरेश की कविता निम्नानुसार है –

''माटी की सौंधी गंध में, जीवन का विस्तार।
हल की रेखा लिख रही, श्रम का अमर विचार।।
पसीने से सींचे खेत हैं, आशा का हर दान।
अन्न उगाता कृषक यहाँ, बन जीवन की शान।।
टूटी छप्पर, सूखी नदी, फिर भी नहीं निराश।
संघर्षों की राह पर, चलता लेकर आस।।
मेले, पर्व, लोकगीत में, बसता गाँव महान।
प्रेम, दया, सहयोग से, जीवित हिन्दुस्तान।।''[7]

इस प्रकार रामनरेश का काव्य ग्रामीण जीवन के सुख–दुःख, संघर्ष और आशाओं का सशक्त साहित्यिक दस्तावेज है। उनकी रचनाएँ पाठक को गाँव के जीवन को समझने, ग्रामीण समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनने और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने की प्रेरणा देती हैं। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण के क्षेत्र में उनका काव्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

निष्कर्ष:

रामनरेश की कविताओं में ग्रामीण जीवन का चित्रण अत्यंत यथार्थपरक, संवेदनशील और जीवन के निकट दिखाई देता है। उन्होंने गाँव को केवल प्राकृतिक सौंदर्य और सरलता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि ग्रामीण समाज की वास्तविक परिस्थितियों, संघर्षों, समस्याओं और मानवीय संबंधों को भी अपनी कविताओं में स्थान दिया है। उनकी कविताओं में किसान, मजदूर, ग्रामीण परिवेश, लोक संस्कृति और सामान्य जनजीवन का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। वे ग्रामीण जीवन के सुखद पक्षों के साथ–साथ गरीबी, आर्थिक कठिनाइयों, सामाजिक विषमताओं और संघर्षों को भी उजागर करते हैं। इस प्रकार उनका काव्य ग्रामीण समाज

की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है। रामनरेश का ग्रामीण जीवन संबंधी काव्य केवल वर्णनात्मक नहीं है, बल्कि उसमें सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का समावेश भी है। वे ग्रामीण संस्कृति में निहित आत्मीयता, सहयोग, श्रम और मानवीय मूल्यों को महत्व देते हैं। उनकी कविताएँ गाँव के जीवन–संघर्षों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए बेहतर सामाजिक व्यवस्था और मानवीय संबंधों की स्थापना का संदेश देती हैं। इस दृष्टि से रामनरेश की कविताएँ हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, जो पाठकों को ग्रामीण समाज की वास्तविकताओं को समझने और उसके प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

संदर्भ –

[1] शर्मा, रामविलास. प्रगति और परम्परा. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2001, पृ. 95–103।
[2] वाजपेयी, नंददुलारे. आधुनिक हिन्दी साहित्य. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2006, पृ. 221–228।
[3] प्रेमशंकर. हिन्दी कविता में किसान जीवन. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2012, पृ. 64–72।
[4] द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2011, पृ. 143–149।
[5] सिंह, नामवर. इतिहास और आलोचना. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2003, पृ. 178–185।
[6] मिश्र, विद्यानिवास. भारतीय लोक संस्कृति. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2008, पृ. 132–139।
[7] त्रिपाठी, रामनरेश. मानसी. प्रयाग : हिन्दी मन्दिर, 1927, पृ. 27